पुनर्जागरण के प्रभाव

पुनर्जागरण विश्व-इतिहास की सर्वाधिक महत्वपूर्ण घटनाओं में से एक है। पुनर्जागरण के साथ ही विश्व ने एक नए युग में प्रवेश किया। पुनर्जागरण ने न केवल साहित्य, कला, विज्ञान को अपितु मानव जीवन के प्रत्येक क्षेत्र को प्रभावित किया। मानव ने मध्ययुगीन रूढ़ियों, मान्यताओं और अंधविश्वासों को त्याग कर एक नवीन और प्रगतिशील समाज की रचना पर बल दिया। संक्षेप में पुनर्जागरण के प्रभाव निम्नलिखित थे —

1. साहित्य के क्षेत्र में —

पुनर्जागरण के कारण विद्या और साहित्य की अत्यधिक उन्नति हुई। पुनर्जागरण से पूर्व विद्वान लैटिन और यूनानी भाषाओं में अपनी पुस्तक की रचना करते थे परंतु पुनर्जागरण के कारण बोलचाल की भाषा में साहित्य की रचना की जाने लगी। अब जर्मन, फ्रेंच, अंग्रेजी, स्पेनिश, इतालवी आदि भाषाओं का विकास हुआ। अब समस्त यूरोप में लोक भाषाओं तथा राष्ट्रीय साहित्य की रचना होने लगी। इस प्रकार पुनर्जागरण

के कारण अनेक यूरोपीय भाषाओं का विकास हुआ।

पुनर्जागरण के कारण साहित्य पर से धर्म का प्रभाव नष्ट हो गया। अब साहित्य में मानव जीवन से संबंधित विषयों पर विवेचन किया जाता था। अब साहित्य आलोचना प्रधान, मानववादी तथा व्यक्तिवादी हो गया। इस युग में काव्य, महाकाव्य, नाटक, उपन्यास, कहानी, निबन्ध आदि पर उच्च कोटि की रचनाएँ लिखी गई। गद्य तथा पद्य दोनों में साहित्य का विकास हुआ।

1) इटली का साहित्य —

पुनर्जागरण के कारण इतालियन भाषा का पर्याप्त विकास हुआ। यहाँ के विद्वानों ने अनेक उच्च कोटि की कविताएँ लिखीं।

इटली के प्रमुख साहित्यकारों का वर्णन इस प्रकार है —

1) दान्ते (1265-1321) — दान्ते इटली का प्रकाण्ड विद्वान था। वह अपने समय का श्रेष्ठ कवि था। उसे पुनर्जागरण का अग्रदूत माना जाता है। उसने 'डिवाइन कामेडी' की रचना नामक महाकाव्य की

(iv) एरिआस्टो —

एरिआस्टो इटली का प्रसिद्ध कवि था। उसने 'ओर्लेंडो' नामक काव्य ग्रंथ की रचना की जिससे उसको काफी प्रसिद्धि मिली।

(v) टासो —

टासो भी इटली का प्रसिद्ध कवि था। उसने 'जेरुसलम डिलिवर्ड' नामक काव्य-ग्रन्थ लिखा।

(vi) मेकियावेली —

मेकियावेली इटली का प्रसिद्ध राजनीतिक विचारक तथा प्रसिद्ध साहित्यकार था। उसने 'द प्रिन्स' नामक ग्रंथ की रचना की। उसने 'मन्द्रागोला' नाटक की रचना भी की थी।

(vii) सनजारो ने 'आर्केडिया' लिखा।

2. इंगलैंड का साहित्य —

पुनर्जागरण के प्रभाव से इंगलैंड में भी साहित्य के क्षेत्र में प्रत्यक्ष उन्नति हुई। अंग्रेजी भाषा का अत्यधिक विकास हुआ।

रचना की। इसके माध्यम से उसने लोगों को मानवता, प्रेम एवं देशभक्ति का पाठ पढ़ाया। उसने अपनी पुस्तक में पोप तथा सामंतों के नैतिक पतन की ओर जन-साधारण का ध्यान आकृष्ट किया।

(ii) पेट्रार्क —

पेट्रार्क भी इटली का प्रसिद्ध साहित्यकार था। वह मानववाद का जनक था। उसने प्राचीन यूनानी तथा रोमन ग्रंथों के अध्ययन पर बल दिया। उसने यूनानी तथा लैटिन भाषा के पुराने हस्तलिखित ग्रंथों को संगृहित किया। उसने ~~अफ्रिका~~ 'अफ्रिका' नामक एक लंबा गीत लिखा।

(iii) बोकेशियो —

बोकेशियो लैटिन गद्य साहित्य का पिता कहलाता है। उसने 'डेकेमरॉन' नामक पुस्तक की रचना की, इसमें एक सौ हास्य कहानियों का संकलन है। इन कहानियों में तत्कालीन सामंत एवं कुलीन समाज में व्याप्त बुराइयों का वर्णन किया गया है। 'फियोमेता' (मनोवैज्ञानिक उपन्यास) उसकी अन्य कृति है।

इंग्लैंड के प्रमुख साहित्यकारों का वर्णन इस प्रकार है —

i) चॉसर — (1340-1400)
चॉसर इंग्लैंड का उच्च कोटि का कवि था। उसे अंग्रेजी काव्य का पिता कहा जाता है। उसने 'कैन्टरबरी टेल्स' नामक काव्य-ग्रन्थ लिखा।

ii) सर टामस मूर — (1478-1535)
यह इंग्लैंड का प्रसिद्ध विद्वान था। उसने 'यूटोपिया' नामक ग्रंथ की रचना की। इस पुस्तक में उसने आदर्श समाज तथा आदर्श राज्य के सिद्धान्तों का वर्णन किया है।

iii) एडमन्ड स्पेन्सर —
स्पेन्सर इंग्लैंड का प्रसिद्ध कवि था। उसने 'फेयरी क्वीन' नामक काव्य-ग्रंथ की रचना की। जिसमें मानव स्वभाव का सुन्दर चित्रण किया गया है। इसमें मध्ययुगीन खेल-कूदों तथा तमाशों का वर्णन किया गया है।

(iv) मिल्टन — एक उच्चकोटि का कवि था।

उसने 'पैराडाइज लॉस्ट' तथा 'पैराडाइज रिगेण्ड' नामक काव्य ग्रंथों की रचना की।

(v) फ्रांसिस बेकन — (1561-1626)

यह एक प्रसिद्ध साहित्यकार था। उसने अनेक उच्चकोटि के निबन्ध लिखे। उसने अपने निबन्धों के माध्यम से प्रकृति तथा भौतिक विज्ञानों के अध्ययन पर बल दिया। 'दि एडवांसमेंट ऑफ लर्निंग' तथा 'दि न्यू अटलांटिस' उसकी प्रसिद्ध रचनाएं हैं।

(vi) विलियम शेक्सपियर तथा अन्य — (1564-1616)

विलियम शेक्सपियर एक महान् नाटककार तथा उच्चकोटि का कवि था। उसने अपनी रचनाओं में मानवीय स्वभाव के सभी पहलुओं का सजीव वर्णन किया है। उसके नाटकों में 'हेमलेट', 'मैकबेथ', 'किंग लियर', 'ओथेलो', 'रोमियो एण्ड जूलियट', 'जूलियस सीजर', 'मर्चेंट ऑफ वेनिस' तथा 'एज यू लाइक इट' आदि विशेष रूप से प्रसिद्ध हैं। बेनजानसन तथा मार्लो भी इंगलैंड के

- प्रसिद्ध नाटककार थे।

२. 3. फ्रांस का साहित्य –

पुनर्जागरण के प्रभाव से फ्रांस में भी साहित्य की पर्याप्त उन्नति हुई। फ्रांसीसी भाषा में अनेक रचनाएं रची गईं।

i) विलों – विलों फ्रांस का एक प्रसिद्ध कवि था। उसने फ्रांसीसी भाषा में अनेक कविताएं लिखीं।

ii) रबेलेस या रबेले – रबेलास एक अच्छा गद्य लेखक था। उसने 'गारगान्तुआ (Gargantua) तथा 'पेन्टेगरूल' (Pantagruel) नामक पुस्तकों की रचना की। उसने धार्मिक कट्टरता, प्राचीन रूढ़ियों एवं अंधविश्वासों पर कटु व्यंग्य किए। रबेलास को फ्रांसीसी उपन्यास साहित्य का जन्मदाता माना जाता है। उसने अपने उपन्यासों द्वारा मानव के स्वतंत्र चिंतन के महत्व पर प्रकाश डाला।

(iii) मान्टेन (1533-92) – मान्टेन एक प्रसिद्ध निबंध लेखक था। उसने अपने निबंधों के कारण काफी ख्याति प्राप्त की। उसने

अपने निबन्धों में व्यक्तिगत भावनाओं तथा घटनाओं का सुन्दर चित्रण किया है। वह निर्भीक प्रकृति का व्यक्ति था और शोषण तथा अत्याचार के विरुद्ध आवाज उठाने में तनिक भी संकोच नहीं करता था।

(iv) मौन्तेन —

मौन्तेन भी उच्चकोटि का विद्वान था। वह व्यक्तिगत निबंधों का प्रवर्तक था। उसके निबन्ध बड़ी सरल भाषा में लिखे होते थे।

मौन्तेन के अतिरिक्त रासीन, मालियर, लाफोन्तेन आदि भी प्रसिद्ध साहित्यकार थे। फ्रायसर्ट ने फ्रेंच में काव्य और गद्य दोनों रचनाएं कीं।

4. हॉलैंड का साहित्य

i) इरेसमस — (1466–1536)

इरेसमस हॉलैंड का प्रसिद्ध विद्वान था। इसने 'मूर्खता की प्रशंसा' नामक पुस्तक की रचना की जिसमें उसने

पादरियों तथा चर्च के भ्रष्टाचार पर प्रहार किया तथा तार्किक दृष्टिकोण का प्रचार किया। वह अपने समय का यूरोप का एक प्रतिष्ठित विद्वान था।

5.

जर्मनी का साहित्य

पुनर्जागरण के प्रभाव से जर्मन साहित्य का भी काफी विकास हुआ। जर्मनी में रुडोल्फ एग्रीकोला तथा कोल्टस नामक साहित्यकारों ने जर्मन साहित्य के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

रियुकलिन भी एक उच्च कोटि का विद्वान था।

मार्टिन लूथर ने बाईबिल का जर्मन भाषा में अनुवाद किया।

स्पेन का साहित्य

i) सर्वान्तीज (1527-1613) स्पेन का प्रसिद्ध विद्वान था। इसने (डानक्युजो) (Don Quixote) (डान क्विक्जोट) नामक ग्रंथ की रचना स्पेनिश भाषा में की। इसमें स्पेन के किसानों की दशा का वर्णन

किया गया है और सामंती प्रथा की आलोचना की गई है।

ii) लोपडेवेग ने भी स्पेनिश भाषा के विकास में योगदान दिया।

iii) कैल्डेरन एक उच्चकोटि का कवि था।

iv) मौलिना एक प्रसिद्ध नाटककार ('डानजुआँ' का लेखक) था।

पुर्तगाली साहित्य

i) कैमोन्स पुर्तगाल का प्रसिद्ध विद्वान था। उसने 'लूसियाड' नामक महाकाव्य की रचना की। इसमें वास्कोडिगामा की खोज का विस्तृत विवरण दिया गया है। इसके अलावे मार्सिगल्यो, हाल्स, गिकारडिनी, वल्ला आदि के नाम भी उल्लेखनीय हैं जिन्होंने ऐतिहासिक ग्रंथ की रचना की।

II. **कला के क्षेत्र में**

पुनर्जागरण के परिणाम स्वरूप भवन निर्माण कला, मूर्तिकला चित्रकला तथा संगीत कला आदि का अत्यधिक विकास हुआ। मध्ययुग में कला पर धर्म का बहुत अधिक प्रभाव था तथा कलाकार स्वतंत्र रूप से अपनी अभिव्यक्ति नहीं कर सकते थे परंतु पुनर्जागरण काल में कला धर्म के प्रभाव बन्धनों से मुक्त हो गई। अब कलाकार यथार्थवादी बन गए तथा कला में मौलिकता एवं वास्तविकता पाई जाने लगी। अतः इस काल में प्राचीन एवं मध्यकालीन कला के समन्वय से एक नवीन कला का विकास हुआ। कला के विभिन्न क्षेत्रों में पुनर्जागरण इस प्रकार है —

1. स्थापत्य कला —

मध्यकाल में यूरोप में स्थापत्य कला की गोथिक शैली प्रचलित थी। पुनर्जागरण काल में एक नवीन शैली का जन्म हुआ जिसमें यूनानी, रोमन तथा अरबी शैलियों का समन्वय था। इस नवीन शैली में श्रृंगार, सजावट तथा डिजाइन पर बल दिया जाता था।

इसने कुशल इमारतों की मरम्मत कराने में रुचि दिखलाई तथा रोमन वास्तुशैली का काफी प्रचार किया।

भवनों में सौंदर्य की दृष्टि से फूल-पत्तियों तथा पक्षियों के चित्र अंकित किए गए। भवनों की खिड़कियों को मेहराबों से सजाया जाने लगा। इस नवीन शैली का प्रवर्तक ब्रुनेलेस्की
(1377-1448) था। इस शैली में मेहराबों, गुम्बदों तथा स्तम्भों की प्रधानता थी। अब नुकीले मेहराबों के स्थान पर गोल मेहराबों का निर्माण किया जाने लगा।

पुनर्जागरण काल में नवीन शैली में अनेक इमारतें बनाई गई जिनमें रोम का सेंट पीटर का गिरजाघर विशेष रूप से प्रसिद्ध है। इसका निर्माण माइकेल एंजिलो तथा राफेल जैसे प्रसिद्ध कलाकारों ने किया था। वेनिस का सन्त मार्क का गिरजाघर भी तत्कालीन स्थापत्य कला का श्रेष्ठ नमूना है।

इटली के बाद इस नवीन शैली का प्रसार यूरोप के अन्य देशों में हुआ। फ्रांस के सम्राट फ्रांसिस प्रथम ने नवीन शैली को प्रोत्साहन दिया। इसने इटली के अनेक कलाकारों को पेरिस बुलाया। पेरिस का लुवर का प्रसाद नवीन शैली में बनाया गया। इसी प्रकार जर्मनी, स्पेन, इंग्लैंड

आदि देशों में भी इस नवीन शैली में अनेक भवन बनाए गए। जर्मनी में Elsenach का दुर्ग इस नवीन स्थापत्य कला शैली की रचना है। लंदन में सेन्टपाल का गिरजाघर भी इस नवीन शैली में निर्मित किया गया। इसका निर्माण क्रिस्टोफर वी देख रेख में किया गया। इसी प्रकार 1669 में प्रसिद्ध कलाकार इनिगोजान्स ने व्हाइट हाल में दावत घर का निर्माण करवाया जो कला की अद्वितीय कृति मानी जाती है।

2. मूर्तिकला —

जनजागरण का मूर्तिकला पर भी प्रभाव पड़ा तथा मूर्तिकला के क्षेत्र में काफी उन्नति हुई। अब मूर्तिकला धर्म के प्राचीन बन्धनों से मुक्त हो गई तथा साधु-संतों के स्थान पर साधारण मनुष्य की मूर्तियाँ बनाई जाने लगीं। दोनातेलो एक प्रसिद्ध मूर्तिकार था। सेण्ट जार्ज की मूर्ति उसकी सर्वश्रेष्ठ कृति मानी जाती है।
गिबर्टी भी इस समय का प्रसिद्ध मूर्तिकार था। उसने फ्लोरेन्स के गिरजा घर के द्वार इतने सुन्दर बनाए थे कि

उन्हें देखकर प्रसिद्ध चित्रकार माईकेल एंजिलो ने कहा था कि "ये द्वार तो स्वर्ग के द्वार पर रखे जाने योग्य है।"

माईकेल एंजिलो एक महान मूर्तिकार था। उसने अनेक मूर्तियाँ बनाई जिनमें पोप जूलियस द्वितीय की समाधि पर बनाई गई मूर्तियाँ और फ्लोरेन्स में बनाई गई डेविड की मूर्ति तत्कालीन मूर्तिकला के बेहतरीन नमूने हैं।

लुकाडेला रोबियो भी एक प्रसिद्ध मूर्तिकार था। वह मिट्टी की सुन्दर तथा चिकनी मूर्ति बनाने में निपुण था।

3. चित्रकला —

पुनर्जागरण काल में चित्रकला का अत्यधिक विकास हुआ। चित्रकला में भी नवीन शैली अपनाई गई। अब धार्मिक चित्रों के स्थान पर जन-जीवन से सम्बन्धित मौलिक एवं यथार्थ चित्र बनने लगे। जियटो को चित्रकला का जन्मदाता माना जाता है। वह प्रथम चित्रकार था जिसने मानव एवं प्रकृति पर अनेक चित्र चित्रित किए।

[illegible]

एंजेलिको, बोटी-शैली, लेरदो पेरूजिनो, टिशियन आदि अन्य प्रसिद्ध चित्रकार थे।
इसके अलावे कुछ अन्य अति प्रसिद्ध चित्रकारों का वर्णन निम्नवत् है –

i) लियोनार्डो दा विंसी – (1452 – 1519)
यह इटली का प्रसिद्ध चित्रकार था, उसने मानव की विभिन्न मुद्राओं को चित्रित किया। इन चित्रों में 'मोनालिसा' तथा 'दि लास्ट सपर' अत्यन्त प्रसिद्ध है। इनमें 'मोनालिसा' विश्वविख्यात है। इसकी स्वाभाविक मुद्रा तथा प्राकृतिक दृश्यों का चित्रांकन आश्चर्यजनक है।

(ii) माइकेल एंजिलो – (1475 – 1564)
यह भी एक महान चित्रकार था। अपने चित्रों में सजीवता लाने के लिए उसने शरीर-विज्ञान का गहन अध्ययन किया था। उसने लगभग 145 चित्र बनाए जिनमें 'दी लास्ट जजमेंट' (अंतिम निर्णय) सर्वश्रेष्ठ है। इस चित्र के निर्माण में लगभग 8 वर्ष का समय लगा। इसमें दर्शाया गया है कि मनुष्य भय एवं आतंक से त्रस्त है तथा अभी ईश्वर के प्रेम व दया की कोई

नहीं है।

(iii) राफेल — (1483-1520)
राफेल के चित्र अपनी सजीवता एवं सुन्दरता के लिए प्रसिद्ध है। उसने नारियों एवं बालकों के सुन्दर चित्र बनाए। उसका सबसे प्रसिद्ध चित्र 'सिस्टाइन - मेडोना' है। इस चित्र की गणना विश्व के सर्वश्रेष्ठ चित्रों में की जाती है। इस चित्र में वात्सल्य, प्रेम एवं मातृत्व का सुन्दर चित्रण हुआ है।

(iv) टीशियन — या टिटियान (1477-1576)
टीशियन भी प्रसिद्ध चित्रकार था। इसका तैल चित्र प्रसिद्ध है। इसके द्वारा निर्मित पोप पाल तृतीय एवं सम्राट चार्ल्स पंचम के चित्र बहुत प्रसिद्ध है।

जर्मनी → इटली के अतिरिक्त अन्य देशों में भी चित्रकला का पर्याप्त विकास हुआ। लूकस, ड्यूरर, तथा हैंस होलबीन जर्मनी के प्रसिद्ध चित्रकार थे।

स्पेन— स्पेन में एल ग्रीको, रुबेन्स आदि ने चित्रकला के विकास में अपूर्व योगदान दिया।

हालैंड— ह्यूबर्ट, जॉन वान आइक आदि हालैंड के प्रसिद्ध चित्रकार थे।

4. संगीत कला — 16वीं शताब्दी में संगीत कला के क्षेत्र में अत्यधिक उन्नति हुई। अब वाद्य-संगीत बहुत लोकप्रिय हो गया था। इसी युग में वायलिन तथा पियानो का आविष्कार हुआ। पैलेस्ट्रीना 16वीं शताब्दी का प्रसिद्ध संगीतज्ञ था। उसने सामूहिक संगीत पर 'Masses' नामक पुस्तक लिखी। ~~मार्टिन~~ मार्टिन लूथर ने भी संगीत के विकास में योगदान दिया।

III ~~विज्ञ~~ विज्ञान के क्षेत्र में

पुनर्जागरण के कारण विज्ञान की भी पर्याप्त उन्नति हुई, इसकी सभी शाखाओं में उन्नति हुई, नए सिद्धान्त प्रतिपादित किए गए और नवीन आविष्कार किए गए।

(i) ज्योतिष एवं भूगोल — पोलैंड निवासी (1473-1543) कोपरनिकस ने इस मत का प्रतिपादन किया कि पृथ्वी सूर्य के चारों ओर घूमती है जिससे रात-दिन होते हैं।

हे

केपलर - 1571-1642

(~~कोपरनिकस~~ 1473-1543) जर्मन वैज्ञानिक तथा खगोलशास्त्री केपलर ने कोपरनिकस के सिद्धान्तों को गणित के प्रमाणों से पुष्ट किया। इटली के प्रसिद्ध वैज्ञानिक गैलीलियो ने भी कोपरनिकस के सिद्धान्त की पुष्टि की। उसने दूरबीन का आविष्कार किया। उसने पेण्डुलम का भी आविष्कार किया।

(Newton 1642-1727) इंग्लैंड का निवासी आइजक न्यूटन एक प्रसिद्ध वैज्ञानिक था। उसने गुरुत्वाकर्षण की शक्ति का सिद्धान्त प्रतिपादित किया। उसने '~~प्रिंसि~~ प्रिंसिपिया' नामक एक पुस्तक की रचना की।

2. गणित -

तारतगलियो ने घन समीकरण के सिद्धान्त की खोज की। केपलर ने शंकु सम्बन्धी सिद्धान्त का प्रतिपादन किया। स्टेबिन नामक विद्वान ने दशमलव प्रणाली का प्रचार किया।

3. चिकित्सा शास्त्र -

इस क्षेत्र में भी पर्याप्त उन्नति हुई। नीदरलैंड निवासी वेसेलियस ने 1543 में 'मानव शरीर की बनावट' नामक पुस्तक लिखी।

इंग्लैंड निवासी सर विलियम हार्वे ने (1578-1657)

ने रक्तप्रवाह के सिद्धान्त का अविष्कार किया। इसने बताया कि हृदय से रक्त का प्रवाह शुरु होता है और शरीर के अन्य अंगो में पहुंचता है।

4. रसायन शास्त्र –

इस क्षेत्र में भी कई नए अविष्कार हुए। वॉन हेलमोन्ट (1577-1644) ने कार्बन-डाई-ऑक्साइड नामक गैस की खोज की। कॉर्डस नामक वैज्ञानिक ने गन्धक और एल्कोहल को मिलाकर ईथर का निर्माण किया। राबर्ट बाइल ने गैसों का विस्तार के क्षेत्र में कई खोजें की।

5. भौतिक शास्त्र –

इस क्षेत्र में भी प्रर्याप्त उन्नति हुई। गैलीलियो (1564-1642) ने 1593 में पेण्डुलम का अविष्कार किया जिसके आधार पर आधुनिक घड़ियों का निर्माण हो सका।
गिलबर्ट ने मैगनेटिक सम्बन्धी सिद्धान्त का प्रचार किया जिससे बिजली का अविष्कार संभव हो सका।

IV भौगोलिक खोजें

पुनर्जागरण के परिणामस्वरूप सामुद्रिक यात्राओं तथा भौगोलिक खोजों को विशेष रूप से प्रोत्साहन मिला।

1. पुर्तगाल भौगोलिक खोजों में सबसे आगे रहा। पुर्तगाली शासक हेनरी ने सामुद्रिक यात्राओं को प्रोत्साहन दिया।

2. 1486 में बार्थोलोम्यू डियाज अफ्रीका के दक्षिणी छोर तक पहुंचने में सफल हुआ। जिसके बाद में उत्तमाशा अंतरीप के नाम से जाना गया।

3. 1486 1498 में पुर्तगाली नाविक वास्को-डिगामा उत्तमाशा अन्तरीप से होता हुआ भारत के समुद्र तट पर स्थित कालीकट बन्दरगाह में आ सका। वास्कोडिगामा पहला व्यक्ति था जिसने सर्वप्रथम भारत के जलमार्ग की खोज की।

4. स्पेन ने भी भौगोलिक खोजों में महत्वपूर्ण योगदान दिया। 1492 ई० में कोलम्बस भारत का जलमार्ग खोजने के लिए प्रस्थान किया। 2½ महीने के बाद जब वह बहामा द्वीप समूह पहुंचा तब उसने समझा कि वह भारत के निकट पहुंच गया है, इसलिए उसने

9. 1500 ई० में पुर्तगाली नाविक कैबरल ने ब्राजील की खोज की।

10. 1534 ई० में फ्रांसीसी नाविक जैक कार्टियर ने कनाडा का पता लगाया।

इन भौगोलिक खोजों के परिणाम अत्यंत महत्वपूर्ण सिद्ध हुए। संसार का व्यापार इन अन्वेषणों तथा खोजों के कारण पनप उठा। अब व्यापार के मुख्य पथों के रूप में भूमध्यसागर और बाल्टिक सागरों का स्थान महासागरों ने ले लिया था। व्यापारिक विकास ने पश्चिमी देशों को कालान्तर में साम्राज्यवादी बना दिया।

इसके अतिरिक्त पुनर्जागरण के फलस्वरूप अन्धविश्वास का अन्त हुआ तथा भौतिकवादी दृष्टिकोण का विकास हुआ। वैज्ञानिक दृष्टिकोण व विचार स्वातंत्र्य का विकास, उपनिवेशों की स्थापना, लोकभाषाओं का विकास, मध्यमवर्ग का प्रादुर्भाव आदि भी इसी के फल थे। धर्म सुधार की पृष्ठभूमि भी इसी ने बनाई। चर्च के नियंत्रण से राज्य को मुक्ति मिली।

अतः पुनर्जागरण ने यूरोप को नई दिशा दी, नया ज्ञान विज्ञान दिया और नयी परम्पराएँ दीं, जिनके

सहारे वह आज भी प्रगति के पथ पर अग्रसर है। राष्ट्रीयता का विकास तथा विश्वविद्यालयों में उन्नत पाठ्यक्रम भी पुनर्जागरण की देन थी।

वहाँ के निवासियों को 'रेड इंडियन' की संज्ञा दी, किन्तु वास्तव में वह अमेरिका के तट पर पहुँच गया था। कोलम्बस की इस यात्रा से 'नए विश्व' की खोज करना सरल हो गया।

5. कोलम्बस की प्रेरणा से अनेक नाविक नई दुनिया की खोज में लग गए। इटली के निवासी अमेरिगो ने दक्षिणी अमेरिका का पता लगाया। उसी के नाम पर इस स्थान का नाम अमेरिका रखा गया।

6. पुर्तगाल निवासी ~~मेगेलन~~ फर्नांडो मैगेलन (1519 में) प्रशान्त महासागर को पार करता हुआ फिलिपाइन्स द्वीप समूह में पहुँचा। उसके साथियों ने उत्तमाशा अन्तरीप होकर पृथ्वी का सर्वप्रथम चक्कर लगाया।

7. इंगलैंड निवासी ड्रेक ने 1578-80 में पृथ्वी की परिक्रमा की।

8. 1497 में जॉन कैबाट नामक इटालियन नाविक ने लेब्रेडोर तथा न्यू फाउंडलैंड का पता लगाया और उत्तरी अमेरिका तक की यात्रा की।

एंजेलिको, बोती-शैली, लैस्त्रो पैरुजिनी, तितियन आदि अन्य प्रसिद्ध चित्रकार थे।

इसके अलावे कुछ अन्य अति प्रसिद्ध चित्रकारों का वर्णन निम्नवत् है -

i) लियोनार्डो दा विंसी - (1452-1519)

यह इटली का प्रसिद्ध चित्रकार था, उसने मानव की विभिन्न मुद्राओं को चित्रित किया। इन चित्रों में 'मोनालिसा' तथा 'दि लास्ट सपर' अत्यन्त प्रसिद्ध है। इनमें 'मोनालिसा' विश्वविख्यात है। इसकी स्वाभाविक मुद्रा तथा प्राकृतिक दृश्यों का चित्रांकन आश्चर्य-जनक है।

(ii) माइकल एन्जिलो - (1475-1564)

यह भी एक महान चित्रकार था। अपनी चित्रों में सजीवता लाने के लिए उसने शरीर-विज्ञान का गहन अध्ययन किया था। उसने लगभग 145 चित्र बनाए जिनमें 'दी लास्ट जजमेंट' (अंतिम निर्णय) सर्वश्रेष्ठ है। इस चित्र के निर्माण में लगभग 80 वर्ष का समय लगा। इसमें दर्शाया गया है कि मनुष्य भय एवं आतंक से त्रस्त है तथा अब ईश्वर के प्रेम व दया की कोई आशा